२३ पच्छिमक्खंधाणुयोगद्दारं

सीयलजिणमहिवंदिय तिहुवणजणसीयलं पयत्तेण ।
वोच्छं समासदो हं जहागमं पच्छिमक्खंध ।।१।।

✱ (अ-का प्रत्योः पच्छिमक्खंडं), ता प्रतौ 'पच्छिमक्खंडं (धं)' इति पाठ।)

तीन लोकके जीवोंको शीतल करनेवाले ऐसे शीतल जिनेन्द्रकी वन्दना करके मैं संक्षेपसे आगमके अनुसार पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करता हूँ।

पच्छिमभवक्खंधे त्ति (अ-का प्रत्योः 'पच्छिमभमक्खंडे त्ति', ता प्रतौ 'पच्छिमभवक्खंडे(धे) त्ति' इति पाठः।) अणुयोगद्दारे ओघभवो आदेसभवो भवग्गहणभवो चेदि तिविहो भवो। तत्थ भवग्गहणभवेण पयदं। जो चरिमो भवो तम्हि भवे , तस्स जीवस्स सव्वकम्माणं बंधमग्गणा, उदयमग्गणा, उदीरणमग्गणा संकममग्गणा संतकम्ममग्गणा चेदि एदाओ पंच मग्गणाओ पच्छिमक्खंधाणुयोगद्दारे कीरंति। पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसग्गमस्सिदूण एदासु पंचसु परूवणासु कदासु तदो पच्छिमे भवग्गहणे सिज्झमाणस्स इमा अण्णा परूवणा कायव्वा। तं जहा -- आउअस्स अंतोमुहुत्तसेसे तदो आवज्जिदकरणं करेदि। आवज्जिदकरणे कदे तदो केवलिसमुग्घादं करेदि। पढमसमए दंडं करेदि (म प्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ता प्रतिषु 'करेंति' इति पाठः।) । तत्थि ट्ठिदीए असंखेज्जभागं हणदि। अप्पसत्थाणं कम्माणं अणुभागस्स अणंतभागे हणदि। तदो बिदियसमए कवाडं करेदि। तत्थ सेसियाए ट्ठिदीए असंखेज्जभागे हणदि, सेसाणुभागस्स च अणंते भागे हणदि। तदो तदियसमए मंथं (अ-का प्रत्योः 'मद्ध' इति पाठः।) करेदि। तत्थ वि ट्ठिदि-अणुभागे तहेव (प्रतिषु 'तत्थेव' इति पाठः।) हणदि। तदो चउत्थसमए लोगं पूरेदि (क. पा. सु. पृ. ९००, २-११.) । लोगं पूरमाणे वि ट्ठिदि-अणुभागे तहेव हणदि। ठिदिसंतकम्ममंतोमुहुत्तं ठवेदि संखेज्जगुणमाउआदो। एदेसु चदुसु समएसु अप्पसत्थकम्माणमणुभागस्स अणुसमयमोवट्टणा, एयसमइयो च ट्ठिदिखंडयस्स घादो। एत्तो सेसाए ट्ठिदीए संखेज्जभागे हणदि। सेसस्स अणुभागस्स अप्पसत्थस्स अणंते भागे हणदि। । एत्तो पाए ट्ठिदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स च अंतोमुहुत्तमुक्कीरणद्धा (क. पा. सु. पृ. ९०२, १३-१९) । एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण वचिजोगं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण मणजोगं

णिरुंभदि। अंतोमुहुत्तं गंतूण कायजोगं णिरुंभदि (षट्खंडागम पु. ६, पृ. ४१४; पु. १०, पृ. ३२१. एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरकायजोगेण बादरकायजोगेण णिरुंभइ। तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादरवचिजोगं णिरुंभइ। तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादरउस्सासणिस्सासं णिरुभइ। तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण तमेव बादरकायजोगं णिरुंभइ। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुममणजोगं णिरुंभइ। तदो अंतोमुहुत्तेण सुहुमकायजोगेण सुहुमवचिजोगं णिरुंभइ। तदो अंतोमुहुत्तेण सुहुमकायजोगेण सुहुमउस्सासं णिरुंभइ। क. पा. सु. पृ. ९०४, २०-२६.)। अंतोमुहुत्तं कायजोगं णिरुंभमाणो इमाणि करणाणि करेदि -- पढमसमए अपुव्वफद्दयाइं करेदि पुव्वफद्दयाणं हेट्ठदो। आदिव(ता प्रतौ 'करेदि, अपुव्वफड्डयाणं हेट्ठदो आदि-' इति पाठः।)ग्गणाविभागपडिच्छेदाणं असंखे० भागमोवट्टेदि। जीवपदेसाणमसंखे० भागमोवट्टेदि। एवमंतोमुहुत्तमपुव्वफद्दयाणि करेदि। असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवपदेसाणं च असंखे० गुणाए सेडीए। अपुव्वफद्दयाणि पमाणदो सेडीए असंखेज्जदिभागो सेडिवग्गमूलस्स वि असंखेज्जदिभागो (क. पा. सु. पृ. ९०४, २७-३४.) । एवमपुव्वफद्दयाणि समत्ताणि।

'पश्चिमभवस्कन्ध' अनुयोगद्वारमें भव तीन प्रकारका है -- ओघ भव, आदेश भव ओर भवग्रहण भव। इनमें भवग्रहण भव प्रकरणप्राप्त है। जो अन्तिम भव है उस अन्तिम भवमें उस जीवके सब कर्मोंकी बन्धमार्गणा, उदयमार्गणा, उदीरणामार्गणा, संक्रममार्गणा और सत्कर्ममार्गणा ये पाँच मार्गणाएँ पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वारमें की जाती हैं। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशाग्रका आश्रय करके इन पाँच मार्गणाओंकी प्ररूपणा कर चुकनेपर तत्पश्चात् पश्चिम भवग्रहणमें सिद्धिको प्राप्त होनेवाले जीवकी यह अन्य प्ररूपणा करना चाहिये। यथा -- आयुके अन्तर्मुहूर्त मात्र शेष रह जानेपर तब आवर्जितकरणको करता है। आवर्जितकरणके कर चुकनेपर फिर केवलिसमुद्घातको करता है। प्रथम समयमें वह दण्डसमुद्घातको करता है। उसमें स्थितिके असंख्यात बहुभागको घातता है। अप्रशस्त कर्मोंके अनन्त बहुभागको घातता है। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें वह कपाटसमुद्घातको करता है। उसमें शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागको घातता है और शेष अनुभागके अनन्त बहुभागको घातता है। पश्चात् तृतीय समयमें मंथसमुद्घातको करता है। उसमें भी स्थिति और अनुभाग का उसी प्रकारसे घात करता है। तत्पश्चात् चतुर्थ समयमें लोकको पूर्ण करता है अर्थात लोकपूरणसमुद्घातको करता है। लोकपूरण समुद्घात करते समय भी स्थिति और अनुभागको उसी प्रकारसे घातता है। स्थितिसत्कर्मको अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थापित

करता है जो आयुसे संख्यातगुणा होता है। इन चार समयोंमें अप्रशस्त कर्मोंके अनुभागकी प्रतिसमय अपवर्तना और एक समयवाले स्थितिकाण्डकका घात होता है। यहाँ उतरते समय शेष स्थितिके संख्यात बहुभागका घात करता है। शेष अप्रशस्त अनुभागके अनन्त बहुभागका घात करता है। यहाँ स्थितिकाण्डक और अनुभागकाण्डकका अन्तर्मुहूर्तवाला उत्कीरणकाल प्रवृत्त होता है। अन्तर्मुहूर्त जाकर वचनयोगका निरोध करता है। तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्तमें मनयोगका निरोध करता है। यहाँसे अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्त उच्छ्वास-निःश्वासका निरोध करता है। तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर काययोगका निरोध करता है। अन्तर्मुहूर्तमें काययोगका निरोध करता हुआ इन करणोंको करता है -- प्रथम समयमें पूर्वस्पर्धकोंके नीचे अपूर्वस्पर्धकोंको करता है। आदिम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है। जीवप्रदेशोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है। इस प्रकार अन्तर्मुहूर्तकाल अपूर्वस्पर्धकोंको करता है। इन अपूर्व स्पर्धकोंको असंख्यातगुणहीन श्रेणिके क्रमसे तथा जीवप्रदेशोंके असंख्यातगुणी श्रेणिके क्रमसे करता है। अपूर्वस्पर्धोकोंको प्रमाण श्रेणिके असंख्यातवें भाग और श्रेणिवर्गमूलके भी असंख्यातवें भाग मात्र है। इस प्रकार अपूर्वस्पर्धकोंका कथन समाप्त हुआ।

एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्टीयो करेदि। अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखे० भागमोवट्टेदि। जीवपदेसाणमसंखे० भागमोवट्टेदि। एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए, जीवपदेसाणं च असंखे० गुणाए सेडीए ओवट्टेदि। किट्टीओ किट्टिगुणगारो (कसायपाहुडसुत्ते तु 'किट्टीदो किट्टिगुणगारो' इत्येतस्य स्थाने 'किट्टीगुणगारो' इति पाठः।) पलिदो० असंखे० भागो। किट्टीओ (प्रतिषु 'किट्टीए' इति पाठः।) सेडीए असंखे० भागो, अपुव्वफद्दयाणं च असंखे० भागो। किट्टिकरणे णिट्टिदे तदो से काले अपुव्वफद्दयाणि पुव्वफद्दयाणि (अ प्रतौ 'अपुव्वफद्दयाणिं अपुव्वफद्दयाणि' इति पाठः।) च णासेदि। अंतोमुहुत्तं किट्टिगदजोगो होदि। सुहुमकिरियमप्पडिवादिझाणं झायदि। किट्टीणं चरिमसमए असंखे० भागे णासेदि (अ-का प्रत्योः 'णासेडि' इति पाठः।) । जोगम्हि णिरुद्धम्मि आउअसमाणि कम्माणि करेदि। तदो अंतोमुहुत्तं सेलेसिं पडिवज्जदि, समुच्छिण्णकिरियमणियट्टिझाणं झायदि। सेलेसिअद्धाए ज्झीणाए

सव्वकम्मविप्पमुक्को एमसमएण सिद्धिं गच्छदि त्ति (क. पा. सु. पृ. ९०५, ३६-५२.) । एवं पच्छिमक्खंधे (प्रतिषु 'खंडे' इति पाठः।) त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

यहाँसे लेकर अन्तर्मुहूर्त काल कृष्टियोंको करता है। अपूर्वस्पर्धकोंकी आदिम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है। जीवप्रदेशोंके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है। यहाँसे अन्तर्मुहूर्त काल असंख्यातगुणहीन श्रेणिके क्रमसे कृष्टियोंको करता है, जीवप्रदेशोंका असंख्यातगुणित श्रेणिके क्रमसे अपवर्तन करता है। कृष्टिसे कृष्टिका गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। कृष्टियाँ श्रेणिके असंख्यातवें भाग तथा अपूर्वस्पर्धकोंके भी असंख्यातवें भाग मात्र होती हैं। कृष्टिकरणके समान होनेपर तत्पश्चात् अनन्तर समयमें अपूर्वस्पर्धकों और पूर्वस्पर्धकोंको भी नष्ट करता है। पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल कृष्टिगतयोग होता है और सूक्ष्मक्रिया-अप्रतिपाति ध्यानको ध्याता है। कृष्टियोंके अन्तिम समयमें असंख्यात बहुभागको नष्ट करता है। योगका निरोध हो जानेपर कर्मोंको आयुके समान करता है। तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें शैलेश्यभावको प्राप्त करता है और समुच्छिन्नक्रिया-अनिवृत्ति ध्यानको ध्याता है। शेलेश्यकालके क्षीण होनेपर सब कर्मोंसे मुक्त होकर एक समयमें सिद्धिको प्राप्त होता है। इस प्रकार 'पश्चिमस्कन्ध' यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

* * * * *